आदर्श प्रश्न- पत्र - 1

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'अ'

कक्षा - दसवीं

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है -
   खंड क- 20 अंक
   खंड ख- 15 अंक
   खंड ग - 35 अंक
   खंड घ - 20 अंक
2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के विकल्प छाँटकर लिखिए -**

हरिजन समस्या का मूल कारण अति प्राचीन काल से भारत में चली आ रही वर्ण-व्यवस्था का कुत्सित आधार है | वर्ण-व्यवस्था को लोगों ने अपने हित में ढाल दिया | समाज के उच्च वर्ग ने सदैव उच्च बने रहने की लालसा से उस मूल भावना को समाप्त कर दिया जिसके कारण वर्ण-व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ | वर्ण-व्यवस्था के साथ ही जाति-व्यवस्था का कलंक भी व्याप्त हो गया | इन दोनों ने मिलकर हरिजनों को कभी भी ऊँचा नहीं उठने दिया | जब -जब इस बात का प्रयास किया गया कि हरिजनों को भारतीय समाज का प्रमुख अंग बनाया जाए, वर्ण-व्यवस्था के ठेकेदारों ने उसका प्रबल विरोध किया | हरिजनों को शिक्षा-दीक्षा, उनके उत्थान के लिए कभी भी प्रयास नहीं किए गए | अंतर्जातीय विवाहों को हेय की दृष्टि से देखा गया है | यदि कोई हरिजन कन्या से विवाह कर लेता है तो समाज से बाहर कर दिया जाता है | अस्पृश्य जाति में संस्कारों का निर्माण करने का अथक प्रयास नहीं किया | भारत-सरकार ने अस्पृश्यता कानून पारित करके छुआछुत को प्रोत्साहन देने वाले व्यक्ति को दंडित करने की व्यवस्था की| हरिजनों को आरक्षण की सुविधा प्रदान करके उन्हें समाज में उच्च स्थान दिलाने का प्रयास किया गया | इन सब कार्यों के बाद हरिजन समस्या आज भी बनीं हुई है | इसका मूल कारण यह है की हम अपने संस्करों में परिवर्तन करने के लिए तैयार नहीं हैं |

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) हरिजन समस्या का मूल करण क्या है?

(i) वर्ण-व्यवस्था

(ii) जाति-व्यवस्था

(iii) प्राचीन समाजिक व्यवस्था

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) भारत सरकार ने अस्पृश्यता को हटाने के लिए क्या प्रयास किया?

(i) संविधान ने इनके उत्थान की व्यवस्था

(ii) सरकारी, गैर-सरकारी नौकरियों में आरक्षण

(iii) चनावों में आरक्षण

(iv) उपर्युक्त सभी

(ग) हरिजन जाति स्वयं को हेय क्यों समझती है?

(i) शिक्षा का अभाव

(ii) धन का अभाव

(iii) इच्छा शक्ति का अभाव

(iv) संस्कारों के निर्माण का अभाव

(घ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(i) हरिजन

(ii) वेदोक्त व्यवस्था के प्रतिनिधि

(iii) हरिजन समस्या

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) 'भारतीय' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय कौन-सा है?

(i) इय

(ii) तीय

(iii) रति

(iv) भार

2. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर खिए-**

कुछ दिन पहले दिल्ली में मैं अपने मित्र सूर्यप्रकाश चंद्रकिरण चतुर्वेदी के घर बैठा था | इतने में एक बिल्ली वहां आई | मने 'पूसी-पूसी' करके बुलाया तो वह 'म्याऊँ-'म्याऊँ' करती मेरे पास आ गई | यह देखकर मैं अनिर्वचनीय आनंदातिरेक से उछल पड़ा | इसका कारण केवल इतना ही था कि मेरे और बिल्ली के बीच भाषा की कोई समस्या नहीं थी | दिल्ली में पहली बार हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी आदि भाषाओं की समस्या से मुझे मुक्ति मिली | मेरे द्वारा इस प्रकार स्वाभाविक रूप से बुलाए जाने पर बिल्ली ने स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया दर्शाई | इस प्राकर की सहज प्रतिक्रिया दिखाने वाले प्राणी इस बिल्ली को देखकर मुझे 'वसुधैव कुटुंबकम्' वाक्य सही अर्थ साक्षात्कार हुआ | मेरी ख़ुशी का कारण यह थी कि हमारे बीच भी भाषा की इतनी जटिल समस्या के बावजूद ये बिल्लियाँ उसकी परवाह किए बिना ही कन्याकुमारी की विवेकानंद शिला से लेकर हिमालय एक ही भाषा बोल रही हैं |

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) उपर्युक्तगद्यांश का सर्वोत्तम शीर्षक क्या है?

(i) बिल्ली को सार्वभौम भाषा

(ii) हमारी एकता की प्रतीक बिल्ली

(iii) बिल्ली की भाषा

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) गद्यांश के लेखक को 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सच्चा अर्थ किस कारण ज्ञात हुआ |

(i) बिल्ली को देखकर

(ii) बिल्ली की भाषा सुनकर

(iii) बिल्ली की फोटो देखकर

(iv) संतों को देखकर

(ग) 'मित्र' का सही विलोम क्या होगा?

(i) दुश्मन

(ii) शत्रु

(iii) अमित्रता

(iv) अमित्र

(घ) गद्यांश में लेखक की ख़ुशी का कारण क्या था?

(i) बिल्ली का लेखक की भाषा समझना

(ii) बिल्ली की अनिर्वचनीय सुंदरता

(iii) बिल्ली को चतुराई

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) लेखक ने अपने गद्यांश में बिल्लियों की भाषा का विस्तार क्या बताया है?

(i) कन्याकुमारी की विवेकानंद शिला से आसेतु हिमालय तक

(ii) मैसूर से लेकर दिल्ली तक

(iii) दिल्ली से केरल तक

(iv) उपर्युक्त कोई नहीं

3. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पाठ में पथिक विश्राम कैसा |
लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं,
किन्तु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते है,
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा ||
धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही बोध करता

लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा ||
बस वही है पथिक जो पथ पर निरंतर अग्रसर हो,
हो सदा गतिशील जिसका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतर हो |
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा ||
बाल रवि की स्वर्ण किरणें निमिष में भू पर पहुँचती,
कालिमा का नाश करती, ज्योति जगमग जगत धरती
ज्योति के हम पुंज फिर हमको अमा से भीति कैसा ||
आज तो अति ही निकट है देख लो लक्ष्य अपना,
पग बढ़ाते ही चलो बस शीघ्र होगा सत्य अपना |
धर्म-पथ के पथिक को फिर देव दक्षिण वाम कैसा ||

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) सच्चा पथिक कौन है

(i) जो अपने पथ पर निरंतर अग्रसर हो
(ii) जो बहुत यात्राएँ करता हो
(iii) जो पथिक हमेशा सत्य बोलता हो
(iv) जो सही रास्ते पर चलता हो

(ख) पथ के कंटक को सुमन मानने का क्या अभिप्राय है?

(i) दुर्गम को भी सुगम मानना
(ii) फूल में काँटे होते ही हैं
(iii) पथ पर काँटों के अलावा कुछ मिलता नहीं
(iv) उपर्युक्त कोई नहीं

(ग) 'ज्योति के पुंज' किन्हें कहा गया है?

(i) जो सदा राह के अंधकार से लड़ते रहें
(ii) जो निरंतर अपने पथ पर अग्रसर हों
(iii) उपर्युक्त दोनों सही हैं
(iv) उपर्युक्त दोनों गलत हैं

(घ) बाल रवि हमें अपने कर्म से क्या प्रेरणा देता है?

(i) सभी बाधाओं से लड़ने की
(ii) सदा गतिशील रहने की
(iii) रात को जल्दी सोने की
(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक क्या होगा?

(i) प्रगति का नाम जीवन

(ii) पथिक

(iii) धर्म-पथ के पथिक

(iv) गतिशील जीवन

4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

जब गीतकार मर गया, चाँद रोने आया,
चाँदनी मचलने लगी कफन बन जाने को |
मलयानिल ने शव को कंधों पर उठा लिया,
वन में भेजे चंदन-श्रीखंड जलाने को |

सूरज बोला यह बड़ी रोशनीवाला था,
मैं भी न जिसे भर सका कभी उजियाली से,
रंग दिया आदमी के भीतर की दुनिया को
इस गायक ने अपने गीतों की लाली से !

बोला बूढ़ा आकाश ध्यान जब यह धरता,
मुझ में यौवन का नया वेग जग जाता था |
इसके चिंतन में डुबकी एक लगाते ही,
तन कौन कहे, मन भी मेरा रंग जाता था |

देवों ने कहा, बड़ा सुख था इसके मन की
गहराई में डूबने और उतारने में |
माया बोली, मैं कई बार भी भूल गयी
अपने गोपन भेद बतलाने में |

योगी था, बोला सत्य, भागता मैं फिरता,
यह जाल बढ़ाए हुए दौड़ता चलता था |
जब-जब लेता यह पकड़ और हँसने लगता,
धोखा देकर मैं अपना रूप बदलता था |

मर्दों को आई याद बाँकपन की बातें,
बोले, जो हो, आदमी बड़ा अलबेला था |
जिस के आगे तूफ़ान अदब से झुकते हैं,
उसको भी इसने अहंकार से झेला था |

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) चाँद के रोने का क्या करना था?

(i) गीतकार की मृत्यु

(ii) प्रदूषण

(iii) चंद्रग्रहण

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) चंदन और श्रीखंड की क्या विशेषता है?

(i) यह सुगन्धित होती है

(ii) इनका उपयोग धार्मिक कार्यों में होता है

(iii) उपर्युक्त दोनों

(iv) उपर्युक्त कोई नहीं

(ग) गीतकार की याद पर आकाश में क्या परिवर्तन हुए?

(i) आकाश जावन हो जाता है

(ii) वह बाहर से उर्जावान महसूस करता है

(iii) वह भीतर से उर्जावान महसूस करता है

(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) गीतकार की मृत्यु पर मर्दों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

(i) गीतकार की प्रशंसा की

(ii) गीतकार को अलबेला तथा बाँका बताया

(iii) गीतकार को स्वाभाविक बताया

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(i) जब गीतकार मर गया

(ii) गीतकार का महत्त्व

(iii) गीतकार

(iv) योगी - गीतकार

खण्ड - ख

(व्याकरण)

5. **निम्नलिखित के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए –**

(क) बच्चा दौड़ कर मेरे पास आया | वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए |

(ख) राम आया और चला गया | वाक्य को सरल वाक्य में बदलिए |

(ग) कमाने वाला खाएगा | वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए |

(घ) जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब वे चल गए | वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए |

6. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए:**

(क) 'प्राची पत्र लिखती है' वाक्य को कर्मवाच्य में रूपांतरित कीजिए |

(ख) 'क्या वे लिखेंगे' वाक्य का भाववाच्य में रूपांतरण कीजिए |

(ग) 'रमा नहीं खाएगी |' वाक्य को भाववाच्य में रूपांतरित कीजिए |

7. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पद का परिचय दीजिए |**
   (क) हम आज भी देश पर पर मरने के लिए तैयार हैं |
   (ख) हम बाग में गए, परन्तु वहां कोई आम नहीं मिला |
   (ग) अहा! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं |
   (घ) जल्दी करो वे सब आते होंगे |

8. **काव्यांश पढ़कर उसमें निहित रस पहचानकर लिखिए:**
   (क) देखहु तात बसंत सुहावा |
   प्रिया हीन मोहि उर उपजावा ||
   (ख) वीर रस का स्थायीभाव है?
   (ग) भय किस रस स्थायीभाव है?
   (घ) निम्नलिखित काव्यांश में कौन सा स्थायी भाव है?
   जसोदा हरि पालने झुलावै।
   हलरावै, दुलरावै, मल्हावै, जोई सोई कछु गावै।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए-**
   पूरी बात तो अब पता नहीं, लेकिन लगता है कि देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी नहीं होने और अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं बहुत ज्यादा होने के कारण काफ़ी समय ऊहापोह और चिट्ठी-पत्री में बर्बाद हुआ होगा और बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा, और अंत में कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर-मान लीजिए मोतीलाल जी-को ही काम सौंप दिया होगा, जो महीने-भर में मूर्ति बनाकर 'पटक देने' का विश्वास दिला रहे थे |
   (क) मोतीलाल जी कौन थे?
   (ख) नगरपालिका का समय क्यों बरबाद हो रहा था?
   (ग) मूर्ति बनाकर पटक देने से क्या अभिप्राय है?

10. **निम्नलिहित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-**
   (क) कस्बे में घुसने से पहले हालदार साहब के मन में क्या ख्याल आया और क्यों?
   (ख) भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए |
   (ग) लेखक के सामने नवाब साहब ने खीरा खाने का कौन-सा खानदानी रईस तरीका अपनाया?
   (घ) लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है ?

11. **निम्नलिखित पद्यांश को पड़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर लिखिए -**

उधौ, तुम हौ अति बड़भागी |
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी |
पुरइनी पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी |
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी |
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौं, दृष्टि न रूप परागी |
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी ||

(क) 'अति बड़भागी' में निहित व्यंग्य-भाव को स्पष्ट कीजिए |

(ख) उद्धव के व्यवहार की तुलना किससे की गई है?

(ग) 'अपरस रहत सनेह तगा तैं' - सुभाग्य है या दुर्भाग्य? स्पष्ट कीजिए |

12. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर- संक्षेप में लिखिए:**

(क) गोपियों ने उद्दव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

(ख) 'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै' - पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए |

(ग) 'कवि सीवन को उधेड़ कर देखना' किसे कह रहा है?

(घ) फागुन के प्रभाव से पेड़ों की डालियों का स्वरूप किस-किस तरह का हो गया है |

13. 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का अपने बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए |

खण्ड-घ

('लेखन')

14. **दिए गए संकेत बिन्दुओ के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए -**

(क) युवाओं में भटकाव

संकेत बिंदु: 1. दिन-ब-दिन भटकता युवा वर्ग, 2. सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों में अवमूल्यन, 3. युवाओं में भटकाव रोकने के उपाय, 4. युवा वर्ग ही देश का भावी कर्णधार है,

अथवा

(ख) विज्ञापन

संकेत-बिंदु: 1. विज्ञापन के विविध आयाम, 2.सूचना क्रांति में विज्ञापन कि भूमिका 3. विज्ञापन का प्रभावकारी उपयोग |

अथवा

(ग) साइबर अपराध का आतंक

संकेत बिंदु: 1. हैकिंग , 2. इंटरनेट कि असुरक्षा, 3. साइबर अपराधियों कि पहचान | असुरक्षा ने कि सबकी नींद हराम, 3. साइबर अपराधियों कि पहचान करके उन्हें कदा दंड देनें कि व्यवस्था |

15. प्लास्टिक की चीजों से हो रही हानि के बारे में किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने सुझाव दीजिए।

16. **निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए:**

परिश्रम से व्यक्ति महान कार्य कर सकता है | परिश्रम को अधम कार्य मानना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है | परिश्रम ही वह साधन है जिससे हम बाधों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और अपने बड़े-बड़े कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं | नदियों पर पुल बने हैं | लोग आसानी से नदी पार करते हैं | पुलों का निर्माण परिश्रम का ही परिणाम है | यदि व्यक्ति में परिश्रम का गुण है तो कभी दुखी और चिंतातुर नहीं होता | उसमें पुरुषार्थ की प्रवृत्ति होती है | वह कठिन-से-कठिन आपदा को हँसते-हँसते झेल लेता है |

आदर्श प्रश्न- पत्र - 1

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'अ'

कक्षा - दसवीं

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **(क)** (iv) उपर्युक्त सभी
   (ख) (iv) उपर्युक्त सभी
   (ग) (iv) संस्कारों के निर्माण का अभाव
   (घ) (iii) हरिजन समस्या
   (ङ) (i) इय

2. **(क)** (i) बिल्ली को सार्वभौम भाषा
   (ख) (ii) बिल्ली की भाषा सुनकर
   (ग) (ii) शत्रु
   (घ) (i) बिल्ली का लेखक की भाषा समझना
   (ङ) (i) कन्याकुमारी की विवेकानंद शिला से आसेतु हिमालय तक

3. **(क)** (i) जो अपने पथ पर निरंतर अग्रसर हो
   (ख) (i) दुर्गम को भी सुगम मानना
   (ग) (iii) उपर्युक्त दोनों सही हैं
   (घ) (i) सभी बाधाओं से लड़ने की
   (ङ) (i) प्रगति का नाम जीवन

4. **(क)** (i) गीतकार की मृत्यु
   (ख) (iii) उपर्युक्त दोनों
   (ग) (iv) उपर्युक्त सभी
   (घ) (ii) गीतकार को अलबेला तथा बाँका बताया
   (ङ) (i) जब गीतकार मर गया

खण्ड - ख

(व्याकरण)

5. **(क)** बच्चा दौड़ा और मेरे पास आया |
   (ख) राम आकर चला गया |
   (ग) जो कमाएगा, वह खाएगा |
   (घ) मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए |

6. **(क)** प्राची द्वारा पत्र लिखा जाता है |
   (ख) क्या उनसे लिखा जाएगा ?
   (ग) रमा से खाया नहीं जाएगा |

7. **(क)** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक
   (ख) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक |
   (ग) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक |
   (घ) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग, कारक, 'आते होंगे' क्रिया का कर्ता |

8. **(क)** प्रश्नोक्त पंक्तियों में श्रृंगार रस की झलक मिलती है | ये वियोग श्रृंगार का अचूक उदाहरण है|
   (ख) उत्साह
   (ग) भयानक रस
   (घ) वात्सल्य

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. **(क)** मोतीलाल जी कस्बे के हाई स्कूल के चित्रकला (ड्राइंग) के शिक्षक थे |
   (ख) नगरपालिका का समय लागत का अनुमान नहीं होने के कारण, बजट कम होने के कारण तथा मूर्ति स्थापना की लागत ज्यादा होने के कारण बर्बाद हो रहा था |
   (ग) मूर्ति बनाकर पटक देने से अभिप्राय है कि किसी भी प्रकार दी गई समय की मोहलत में मूर्ति का निर्माण किया जाएगा |

10. **(क)** कस्बे में घुसने से पहले उनके मन में यह ख्याल आया कि कस्बे की सबसे महत्त्पूर्ण जगह पर सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति विराजमान होगी, परन्तु सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा | उनके ऐसा सोचने का कारण यह था कि मूर्ति बनाने वाला ड्राइंग मास्टर उस मूर्ति में चश्मा बनाना भूल गया था और मूर्ति की आँखों पर चश्मा लगाने वाला कैप्टन मर गया था | अंतः अब मूर्ति की आंखों पर चश्मा होने की संभावना नहीं थी |
    (ख) बालगोबिन भगत एक संत स्वभाव के व्यक्ति थे | जैसा भी मिला उसे पाकर संतोष धारण कर लिया | वे सामान्य कद के गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे | लगभग साठ वर्ष के ऊपर की आयु होने के कारण बाल सफेद हो गए थे | वे दाढ़ी या जटाएँ नहीं रखते थे | वे नाम मात्र के कपड़े पहनते

थे जिसमे एक लंगोटी और सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी थी | सर्दी में एक कंबल ले लेते थे | माथे पर रामानंदी चंदन का टिका लगाते थे और गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते थे |

(ग) नवाब साहब दूसरों के सामने साधरण-सा खाद्य खीरा खाना नहीं चाहते थे | इसलिए उन्होंने खीरे को किसी कीमती वस्तु की तरह तैयार किया | उस लज़ीज़ खीरे को देखकर लेखक के मुँह में पानी आ गया था | अब नवाब साहब की इज्जत का सवाल था इसलिए उन्होंने खीरे की फाँक को उठाया नाक तक ले जाकर सूँघा | खीरे की महक से उनके मुँह में पानी आ गया | उन्होंने उस पानी को गतका और खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंक दिया | इस तरह सारा खीरा बाहर फेंक दिया| सारा खीरा फेंक कर लेखक को गर्व से देखा | उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसे वह लेखक से कह रहे हों कि नवाबों के खीरा खाने का यह खानदानी रईसी तरीका है |

(घ) लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहा है क्योंकि उनका जीवन अविस्मरणीय है | उन्होंने अपने जीवन काल के 35 वर्षों में भारतभूमि को अपनी कर्मभूमि बनाकर सभी भारतीयों को अपनत्व, वात्सल्य, ममता, करुणा, प्रेम, सांत्वना जैसे मानवीय गुणों से सींचा | इसी कारण वे मृत्यु उपरांत भी सभी के दिलों की यादों में बस गए | उनका जीवन पारंपरिक संन्यासी से अलग सबसे ऊँचाई पर मानवीय करुणा की वर्षा एवं लहराता दिखाई देता है | उनकी स्मृति सभी के मनमें आज भी बसी है | वे आज सभी से दूर होकर भी निकट हैं | उनका जीवन अनुकरणीय एवं श्रद्धा के योग्य है |

11. **(क)** गोपियों के द्वारा प्रयुक्त 'अति बड़भागी' अपने भीतर व्यंग्य भाव समेटे हुए है | वे हँसी-मज़ाक में उधौ को भाग्यशाली मानती है क्योंकि वह श्रीकृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम के बंधन में नहीं बँध सके और न ही कभी उनके प्रेम में व्याकुल हुए |

(ख) उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी में पड़े रहेने वाले कमल के पत्ते और तेल की उस गगरी की गई है जिस पर जल का कोई प्रभाव नहीं दृष्टिगोचर नहीं होता |

(ग) स्नेह के दंगे से दूर रहना अर्थात् किसी का प्रेम नहीं पा सकता सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य है | जीवन का वस्तविक सुख तो प्रेम की अनुभूति में है, न कि सांसारिक विषय-वासनाओं के भोग में |

12. **(क)** गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा उन लोगों को दें की बात कही है जिनके मन में चकरी हो, जो अस्थिर बुद्धि हों, जिनका मन चंचल हो | जिनके मन प्रेम-भाव के कारण स्थिरता पा चुके हैं, उनके लिए योग की शिक्षा की कोई आवश्यकता हीं नहीं है |

(ख) काव्य में यह माना जाता है कि प्रातःकाल में जब कलियाँ खिलकर फूल बनती है तो 'चट्' की ध्वनि होती है | कवि ने इसी काव्य रुढ़ि का प्रयोग करते हुए बालक रूप बसंत को प्रातःकाल जगाने के लिए गुलाब के फूलों की सहायता ली है | सुबह-सवेरे गुलाबों के खिलते समय चटकने की ध्वनि होती है | कवि ने कल्पना की है कि गुलाब के फूलों का चटककर खिलना ऐसा लगता है मानों वे चटक की ध्वनि से बालक रूपी बसंत को जगाती हैं |

(ग) कवि अपनी आत्मकथा लिखने को 'सीवन को उधेड़कर देखना' कह रहा है | कवि का आशय यह है कि यदि वह सच्ची आत्मकथा लिखेगा तो लोगों को उसके जीवन का एक-एक रहस्य का पता चल जाएगा | लोग उसके एक-एक दुख और अभाव को देखकर उसके जीवन को चिथड़े-चिथड़े कर डालेंगे |

(घ) फागुन के प्रभाव से पेड़ों की डालियाँ पत्तों से भर गई हैं | जिन डालियों पर हरे पत्ते लगे हुए हैं, वे डालियाँ हरी-भरी देखाई दे रही हैं | कुछ डालियों पर नए-नए कोमल पत्ते अर्थात् पल्लव आए हुए हैं | पल्लवों के लाल रंग के कारण वे डालियाँ लाल रंग की नजर आ रही हैं | कुछ डालियाँ खिले हुए ताज़े फूलों से लिपटी हुई हैं | वहाँ ऐसा लग रहा है जैसे उनके गले में भीनी-भीनी सुगंध लिए फूलों की मालाएँ डाल दी गई हों |

13. वर्णित अध्याय में माता-पिता का बच्चे के प्रति असीम वात्सल्य व्यक्त हुआ है | बच्चे का पिता के साथ विभिन्न शैतानियाँ करना यथा - मूँछ खींचना, कुश्ती लड़ना, कंधे पर बैठना आदि क्रियाएँ पिता को बच्चे के प्रति वात्सल्य से भर देतीहैं | पिता द्वारा बच्चे के गालों पर खट्टा-मीठा चुम्मन लेना, पिता के रोम-रोमको ख़ुशी प्रदान करता है | पिता कभी भी बच्चे की शैतानी भरे खेल-तमाशों से तंग नहीं होते | पिता द्वारा बच्चे की गुस्ताखियों को माफ़ करना प्यार का ही प्रतीक है| माता द्वारा बच्चे को मुँह भर रोटी के कौर खिलाना और यह कहना " जब खाएगा बड़े-बड़े कौर, तब पाएगा दुनिया का ठोर" बच्चे के प्रति वात्सल्य, आशीर्वाद तथा शुभ आकांक्षाओं काचिह्नहै| बच्चे को नहलाना, चोटी-गूँथना, काजल लगाना, रंगीन भयभीत होने पर होनेपर अपनी गोद में उठाकर उसे पुचकारना, अंगो को अपने आँचल से पोंछकर बच्चे को चूमना आदि में सहज ही माँ के ममत्व के दर्शन होते हैं | माता-पिता के लिए बच्चा ही खुशियों का भंडार है | उसके बिना उनका जीवन नीरस एवं सूना है |

खण्ड-घ

('लेखन')

14. **(क) युवाओं में भटकाव**

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा वर्ग में जितना अधिक भटकाव दिखाई देता है, उतना शायद पहले कभी नहीं था |'युवाओं में भटकाव' का तात्पर्य यह है कि युवा वर्ग अपने मूल उद्देश्यों नैतिक कर्तव्य तथा उचित मार्ग से विमुख होकर अनुचित उद्देश्यों कि प्राप्ति हेतु अवांछित कार्यों का सहारा लेते हुए गलत मार्ग पर कदम बढ़ाने लगा है |

युवा-जीवन कर्तव्यों से भरा है, जिसका पालन करना युवा वर्ग का धर्म है; जैसे देश के सम्मान कि रक्षा-करना, विश्व में इसकी बेहतर छवि का निर्माण करना, समाज कि परंपराओं कि रक्षा करना, अपनी संस्कृति कि उपेक्षा न करना, स्वच्छ समाज के निर्माण के लिए प्रत्यनशील बनना, परिवार कि मर्यादा कि रक्षा करना, स्वच्छ राजनितिक माहौल के निर्माण हेतु संघर्ष करना, नशाखोरी प्रवृत्ति से बचना तथा अध्ययन के प्रति सजग रहना आदि, परन्तु आज दिन-ब-दिन युवा वर्ग इन कार्यों से भटकता जा रहा है |

युवावस्था अति संवेदनशील अवस्था होती है | यही अवस्था है, जिसमें व्यक्ति अपना भाग्य स्वयम निर्मित कर समग्र विकास करता है | सर्वप्रथम युवा यह सुनिश्चित कर लें कि उन्हें हर काम अपने विवेक से करना है | स्वार्थ सिद्धि करने वाले राजनेताओं को वे अपना आदर्श कदापि न माने तथा उनसे दूर रहें | महत्त्वाकांक्षाओं को अपने ऊपर हावी न होने दे | युवा वर्ग को यह जान ले कि मेहनत, ईमानदारी, समय व लगन से ही स्वर्णिम भविष्य रच सकता है | युवा वर्ग को यह जान लेना चाहिए कि वे ही देश के भावी कर्मधार हैं |

वर्तमान कि जटिलताओं और समस्याओं के घने वन में युवा मन अनायास ही दिशा-भ्रमित हो जाता है| फलस्वरूप हमारे युवक-युवतियाँ उस अंधे रास्ते पर आगे बढ़ते चले जा रहे हैं | जिसकी परिणति उन्हें नहीं मालूम है | जबकि देश को आगे ले जान एक दायित्व उन्हीं के कंधों पर है | अतः 'युवाओं में भटकाव' वाली समस्या पर तत्काल कदम नहीं उठाया गया , तो भारत को 21 वीं शताब्दी में स्वर्णिम राष्ट्र बनाने का स्वप्न दिवास्वप्न बनकर रह जाएगा |

अथवा

(ख) विज्ञापन

हिंदी शब्द में 'विज्ञापन'सामान्य अर्थ है - जानकारी या प्रचार | इसके अतिरिक्त हिंदी शब्द सागर विज्ञापन का अर्थ 'सूचना' बनाता है | आंग्ला में विज्ञापन को 'एडवरटाइजमेंट' कहते हैं जो लैटिन शब्द 'एड्यर' से विकसित हुआ है | विज्ञापन से व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक असर डालने के लिए इसे तथ्यपरक मनोरंजन करने कि चेहस्ता कि जाती है |

दूरसंचार कि व्यवस्था में तकनीकी प्रगति के साथ विज्ञापन को विविध आयाम मिल गए है ; जैसे - होर्डिंग, भित्ति चित्र, लेखन, मुद्रण, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि | बाजार, उद्योग तथा समाज के विकास के साथ-साथ विज्ञापन को भी प्रश्रय मिलता गया |

विकास शील देशों में आर्थिक पिछड़ापन सामाजिक विसंगतियाँ तथा राष्ट्रीय एकता पर खतरे आदि स्पष्ट दृष्टिगोचर हैं | संसाधनों कि अनुपलब्धता के कारण भुखमरी तथा बेरोजगारी व्याप्त है | मूलभूत सुविधाएँ अभी भी समृद्ध वर्ग के लोगों तक सिमित हैं | अशिक्षा, कुपोषण तथा पिछड़ेपन से उत्पन्न कुंठा आदि से ग्रस्त होकर लोग या तो 'हिंसक विद्रोही' हो रहे हैं या लाचारी कि मानसिकता का शिकार हो रहे हैं | इन परिस्थितिओं से निपटने के लिए सूचना संसाधन का सुनियोजित दोहन विज्ञापन के द्वारा किया जा सकता है | भारत में विरुद्ध, नेत्रदान, राष्ट्रीय एकता को सशक्त करने के लिए, नागरिकों को मताधिकार कि शक्ति बताने आदि में विज्ञापन का प्रभावकारी उपयोग हुआ है|

हास्य व व्यंग्य के स्तर का ध्यान नहीं रखा जाता | ये सब गलत प्रवृत्तियाँ विज्ञापन को असरदार बनाने के लिए प्रचलन में हैं | इनसे उपभोक्ता न केवल दिग्भ्रमित होते हैं, बल्कि उनसे सासंकृतिक अभिरुचि का स्तर भी गिरता है | विज्ञापन कि शक्ति के उत्तरदायित्वहीन उपयोग से इसकी मूल उपयोगिता पर प्रश्न-चिह्न लग रहा है |

वस्तुतः विज्ञापन उपभोक्तावादी संस्कृति को घोषित करने के लिए नहीं है, बल्कि इसकी उपयोगिता व्यकित कि विचारशीलता को प्रेरित करने के लिए है | जिस तरह सुसंकृतिक तरीके से यह सामाजिक

राष्ट्रीय हित के विचारों को प्रचारित करता है, वैसे ही उत्पादों को प्रचारित करे | 'स्वस्थ आचरण के सूत्र' कि आवश्यकता 'विज्ञापन उद्योग' में कार्यरत लोगों को भी है | 'व्यावसायिक नैतिकता' अपनाकर ही विज्ञापन का सदुपयोग संभव है |

अथवा

(ग) साइबर अपराध का आतंक

सूचना क्रांति ने आज संपूर्ण विश्व के परिदृश्य को बदल दिया है | सारी दुनिया इंटरनेट के जरिए इस प्रकार जुड़ गई है, जैसे वह एक ही परिवार हो | इंटरनेट ने यहाँ हमें अनेक सुविधाएँ दी हैं, वहीं 'साइबर अपराध' का आतंक भी दिया है | इंटरनेट का प्रसार जैसे-जैसे हो रहा है उसी तीव्रता से साइबर अपराध का खतरा भी बढ़ रहा है |

साइबर अपराधों कि बढ़ती हुई संख्या से सभी वर्ग चिंतित हैं | व्यापारी आज इंटरनेट से ही पूरी दुनिया से जुड़े हैं अंतः इंटरनेट कि असुरक्षा ने उनकी नींद हराम कर दी है | कई कंपनियाँ यह मानती हैं कि उनके कंप्यूटरों का प्रयोग बिना उनकी जानकारी के इन अपराधियों ने किया है | सरकारी विभागों के कंप्यूटरों में संचित गोपनीय सूचनाएँ भी अब इन अपराधियों कि पहुँच में हैं |

साइबर अपराधों को रोकने के लिए कई देशों को संधि करने पर विवश होना पड़ा है | कुछ समय पूर्व यूरोपीय परिषद् कि एक समिति ने एक व्यापक संधि के मसौदे पर हस्ताक्षर किए हैं जिसका उद्देश्य साइबर अपराधों को रोकथाम करना है | इस संधि के तहत इंटरनेट पर अधिक प्रभावी व्यवस्था करने, सुरक्षा उपाय बढ़ाने एवं साइबर अपराधियों कि पहचान करके उन्हें कड़ा दंड देने कि व्यवस्था कि गई है|

इसी तरह, यदि दुनिया के अन्य देश भी सुरक्षा उपायों को मजबूत करें तथा नई तकनीक कला विकास करें तो साइबर अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकता है | साइबर अपराधों को रोकने में इंटरपोल भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है |

15. पता: .....

दिनांक: .....

सेवा में,

संपादक महोदय,

राष्ट्रीय सहारा,

नई दिल्ली।

विषय: प्लास्टिक की चीजों से हो रही हानि के बारे में बताने हेतु पत्र।

श्रीमान जी,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र द्वारा। प्लास्टिक की चीजों से हो रही हानि के बारे में लोगों को बताना चाहता हूँ। प्लास्टिक जहाँ रहता है, वहाँ हर स्थान पर प्लास्टिक मौज़दूगी और उससे होने वाले हानिकारक प्रभाव प्लास्टिक प्रदूषण कहलाते हैं। प्लास्टिक ऐसा पदार्थ है, जो सरलता से नष्ट नहीं

होता है। इसके मिट्टी में होने से पौधे पनप नहीं पाते हैं, इसे यदि नष्ट करके जलाया जाए, तो हानिकारक गैसें निकलती है, जो वातावरण के लिए खराब है। आज चारों ओर प्लास्टिक का बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। इसका दुष्परिणाम यह है कि हर जगह प्लास्टिक का कचरा फैला हुआ है। बड़े-बड़े महानगरों से लेकर पर्वतीय प्रदेशों तक में प्लास्टिक ही प्लास्टिक नज़र आ रहा है। यह सस्ता और ठिकाऊ होता है। धूप ,सर्दी तथा गर्मी का इस पर असर नहीं होता है। यह हल्का और किफायती भी होता है। यही कारण है कि लोगों में इसकी माँग बड़ी है। परन्तु इस कारण प्लास्टिक कचरे में भी वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि पृथ्वी के वातावरण और उसके परिवेश को दूषित किए जा रहे ही। यदि जल्द ही इसका निपटारा नहीं किया गया, तो एक दिन यह हमारी ग्रह को निगलने का मुख्य दोषित बन जाएगा।

अतः हमें चाहिए कि इसका प्रयोग बंद कर दें। इससे हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक शुद्ध वातावरण दे पाएँगें। आशा करता हूँ कि आप मेरे इस लेख को लोगों तक अवश्य पहुँचाएँगे।

धन्यवाद,

भवदीय,

क.ख.ग

16. परिश्रम से हम अपने कार्यों में सफल हो अकते हैं | कार्य-व्यापार में विघ्न-बाधाएँ भी परिश्रम और पुरुषार्थ से हटा दी जाती हैं | परिश्रम को नीच काम मानना अपने जीवन में निर्धनता को निमंत्रण देना है |